❍ 22 / 07 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∫∫ 1 ∫∫ होमवर्क (Marks: 5*4=20)

➢➢ *बुधी को हद से पार शांतिधाम में लेकर गए ?*

➢➢ *बेहद की हिस्ट्री - जियोग्राफी पडी ?*

➢➢ *तपस्या द्वारा सर्व कमजोरियों को भस्म किया ?*

➢➢ *बाप के व स्वयं के गुणों की गिनती कर संपन्न बने ?*

────────────────────────

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆

❂ *तपस्वी जीवन* ❂

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

〰✧ *अगर आपकी वृत्ति में श्रेष्ठ भावना, श्रेष्ठ कामना है तो अपने संकल्प से, दृष्टि से, दिल की मुस्कराहट से सेकण्ड में किसी को बहुत कुछ दे सकते हो। जो भी आवे उसको गिफ्ट दो, खाली हाथ नहीं जाये।* जितना निश्चय रूपी फाउण्डेशन पक्का है उतना ही आदि से अब तक सहज योगी, निर्मल स्वभाव, शुभ भावना की वृत्ति और आत्मिक दृष्टि सदा नेचुरल रूप में अनुभव होगी।

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

∫∫ 2 ∫∫ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

>> *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

——————————————————

✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆

❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂

✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

✺ *"मैं संगमयुगी पुरुषोत्तम आत्मा हूँ"*

〰✧ सदा संगमयुगी पुरुषोत्तम आत्मा हैं-ऐसे अनुभव करते हो? *संगमयुग का नाम ही है पुरुषोत्तम। अर्थात् पुरुषों से उत्तम पुरुष बनाने वाला युग। तो संगमयुगी हो? आप सभी पुरुषोत्तम बने हो ना। आत्मा पुरुष है और शरीर प्रकृति है। तो पुरुषोत्तम अर्थात् उत्तम आत्मा हूँ। सबसे नम्बरवन पुरुषोत्तम कौन है? (ब्रहमा बाबा) इसीलिए ब्रहमा को आदि देव कहा जाता है।* 'फरिश्ता ब्रहमा' भी उत्तम हो गया और फिर भविष्य में देव आत्मा बनने के कारण पुरुषोत्तम बन जाते। लक्ष्मी-नारायण को भी पुरुषोत्तम कहेंगे ना।

〰✧ *तो पुरुषोत्तम युग है, पुरुषोत्तम मैं आत्मा हूँ। पुरुषोत्तम आत्माओंका कर्तव्य भी सर्वश्रेष्ठ है। उठा, खाया-पीया, काम किया-यह साधारण कर्म नहीं, साधारण कर्म करते भी श्रेष्ठ स्मृति, श्रेष्ठ स्थिति हो। जो देखते ही महसूस करे कि यह कोई साधारण व्यक्ति नहीं हैं।* जो असली हीरा होगा वह कितना भी धूल में छिपा हुआ हो लेकिन अपनी चमक जरूर दिखायेगा, छिप नहीं सकता। तो आपकी जीवन हीरे तुल्य है ना। कैसे भी वातावरण में हों, कैसे भी संगठन में हों लेकिन जैसे हीरा अपनी चमक छिपा नहीं सकता, ऐसे पुरुषोत्तम आत्माओंकी श्रेष्ठ झलक सबको अनुभव होनी चाहिए। तो ऐसे है या दफ्तर में जाकर, काम में जाकर आप भी वैसे ही साधारण हो जाते हो? अभी गुप्त में हो, काम भी साधारण है। इसीलिए पाण्डवों को गुप्त रूप में दिखाया है। गुप्त रूप में राजाई नहीं की, सेवा की। तो दूसरों के राज्य में गवर्मेन्ट-सर्वेन्ट कहलाते हो

ना। चाहे कितना भी बड़ा आफीसर हो लेकिन सर्वेन्ट ही है ना। तो गुप्त रूप में आप सब सेवाधारी हो लेकिन सेवाधारी होते भी पुरुषोत्तम हो। तो वह झलक और फलक दिखाई दे।

〰✧ जैसे ब्रह्मा बाप साधारण तन में होते भी पुरुषोत्तम अनुभव होता था। सभी ने सुना है ना। देखा है या सुना है? अभी भी अव्यक्त रूप में भी देखते हो-साधारण में पुरुषोत्तम की झलक है! तो फालो फादर है ना। ऐसे नहीं-साधारण काम कर रहे हैं। मातायें खाना बना रही हैं, कपड़े धुलाई कर रही हैं-काम साधारण हो लेकिन स्थिति साधारण नहीं, स्थिति महान् हो। ऐसे है? या साधारण काम करते साधारण बन जाते हैं? *जैसे दूसरे, वैसे हम-नहीं। चेहरे पर वो श्रेष्ठ जीवन का प्रभाव होना चाहिए। यह चेहरा ही दर्पण है ना। इसी से ही आपकी स्थिति को देख सकते हैं। महान् हैं या साधारण हैं-यह इसी चेहरे के दर्पण से देख सकते हैं।*

✧° ° ••☆••✧° ° ••☆••✧° ° ••☆••✧° °

∫∫ 3 ∫∫ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧° ° ••☆••✧° ° ••☆••✧° ° ••☆••✧° °

———————————————————

✧° ° ••☆••✧° ° ••☆••✧° ° ••☆••✧° °

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧° ° ••☆••✧° ° ••☆••✧° ° ••☆••✧° °

〰✧ जब साइन्स के साधन सेकण्ड में अन्धकार से रोशनी कर सकते हैं तो हे ज्ञान सूर्य बच्चे, आप कितने समय में रोशनी कर सकते हो? *साइन्स से तो साइलेंस की शक्ति अति श्रेष्ठ है।* तो ऐसे अनुभव करते हो कि *सेकण्ड में

स्मृति का स्विच ऑन करते अंधकार में भटकी हुई आत्मा को रोशनी में लाते हैं?*

〰✧ क्या समझते हो? सात दिन के सात घण्टे का कोर्स दे अंधकार से रोशनी में ला सकते हो वा तीन दिन के योग शिविर से रोशनी में ला सकते हो? वा सेकण्ड की स्टेज तक पहुँचे गये हो? क्या समझते हो?

〰✧ अभी घण्टों के हिसाब से सेवा की गति है वा मिनट व सेकण्ड की गति तक पहुँच गये हो? क्या समझते हो? *अभी टाइम चाहिए वा समझते हो कि सेकण्ड तक पहुँच गये हैं?*

✧° ° ••☆••✧° ° ••☆••✧° ° ••☆••✧° °

∫∫ 4 ∫∫ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧° ° ••☆••✧° ° ••☆••✧° ° ••☆••✧° °

────────────────────────

✧° ° ••☆••✧° ° ••☆••✧° ° ••☆••✧° °

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧° ° ••☆••✧° ° ••☆••✧° ° ••☆••✧° °

〰✧ *तो स्व-अभ्यास के लिए भी समय मिले तो करेंगे, नहीं। समय निकालना पड़ेगा।* स्थापना के आदिकाल से एक विशेष विधि चलती आ रही है। कौन सी? फुरी-फुरी तालाब (बूंद-बूंद से तालाब) तो समय के लिए भी यही विधि है। जो समय मिले अभ्यास करते-करते सर्व अभ्यास स्वरूप सागर बन जायेंगे। *सेकण्ड मिले वह भी अभ्यास के लिए जमा करते जाओ, सेकण्ड-सेकण्ड करते कितना हो जायेगा! इकट्ठा करो तो आधा घण्टा भी बन जायेगा।* चलते-फिरते के अभ्यासी बनी। *जैसे चात्रक एक-एक बंद के प्यासे होते हैं। ऐसे स्व अभ्यासी

चात्रक एक-एक सेकण्ड अभ्यास में लगावें तो अभ्यास स्वरूप बन ही जायेंगे।*

⟡° ° ••☆••⟡° ° ••☆••⟡° ° ••☆••⟡° °

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

⟡° ° ••☆••⟡° ° ••☆••⟡° ° ••☆••⟡° °

____

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- सुख के सम्बन्ध् में जाने के लिए पुराने कर्म बन्धन चुक्तु करना"*

➳ _ ➳ मीठे बाबा की कुटिया में बेठ... मै आत्मा बाबा से ख़ुशी में भीगे नयनों से, दिल का हाल बता रही हूँ... मीठे बाबा को बस निहारती ही जा रही हूँ और खुशियो के झूले में झूलती जा रही हूँ... अपने मीठे भाग्य का सिमरन कर.. प्यारे अपने बाबा से पूछ रही हूँ बताओ ना प्यारे बाबा... किस पुण्य ने आपसे मुझ आत्मा को यूँ मिलवाया और *अनाथ से सनाथो वाला जीवन देकर... ईश्वरीय दौलत* को दिलवाया है...

❉ *मीठे बाबा अपनी स्नेहमयी नजरो से मुझ आत्मा को अभिभूत करते हुए बोले :-* " मीठे प्यारे फूल बच्चे... दुःख भरे अब बीत गए है *अब सुख भरे दिन आ गए है..*. अब ईश्वरीय यादो में गहरे डूबकर... अपने सारे कर्म बन्धनों से मुक्त होकर... सुख भरे देवताई सम्बन्धो को जीने की तैयारी करो..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा अति आनन्दित होकर ख़ुशी में झमते हुए बाबा से कह

रही हूँ :-* "मीठे प्यारे बाबा मेरे... आपने जीवन में आकर जीवन कितना सुखमय कर दिया है... दुःख भरे कर्म बन्धनों से छूटने की विधि बताकर... *सदा का चैन और आराम दे दिया है.*.. मै आत्मा आपकी यादो में हर बन्धन से छूटती जा रही हूँ..."

❇ *प्यारे बाबा अपना वरदानी हाथ मेरे सिर पर रखते हुए बोले :-* "मीठे लाडले बच्चे... अब सुख धरा पर चलने की जीजान से तैयारी करो... यादो में डूबकर जल्दी ही सारे हिसाबो को खत्म करो... *बन्धनों से मुक्त होकर, स्वर्ग के मीठे खुशनुमा सम्बन्धो का आनन्द लो.*.."

➽ _ ➽ *मै आत्मा अपने भाग्य से पाये भगवान को देख देख मन्त्रमुग्ध हूँ, और कह रही हूँ :-* "मीठे प्यारे बाबा... किन जनमो के अच्छे कर्मो में मुझ आत्मा को आपकी फूलो वाली गोंद दिलवा कर... मेरा सदा का उद्धार कर दिया है... कभी आपके दर्शन मात्र को प्यासी मै आत्मा... *आज ज्ञान रत्नों से मालामाल होकर, हर बन्धन से छूट रही हूँ.*.."

❇ *प्यारे मीठे बाबा मुझ आत्मा को शक्तिशाली किरणों से निरन्तर सींचते हुए बोले :-* "मीठे लाडले बच्चे... ईश्वर पिता जो सुखो भरी सौगात लेकर धरती पर आया है... *सब कुछ लेकर अपने नाम कर लो... और पिता की जागीरों पर अपना अधिकार जमा लो.*.. दुःख के बन्धनों से छूट कर सच्चे सुखो के सम्बन्धो में सदा मुस्कराओ..."

➽ _ ➽ *मै आत्मा अपने मीठे बाबा को रोम रोम से धन्यवाद दे रही हूँ और कह रही हूँ :-* "प्यारे सिकीलधे बाबा मेरे... कब सोचा था बाबा की *मुझ आत्मा को पढ़ाने और खजानो का मालिक बनाने यूँ भगवान धरा पर आ जायेगा.*.. मुझ पर राजी होकर स्वर्ग की वसीयत को मेरे नाम लिख जायेगा... ऐसे तो ख्वाब भी न संजोये कभी जैसा सुंदर आपने मेरा भाग्य सजाया है..." ऐसी प्यारी प्यारी बाते अपने बाबा को सुनाकर... मै आत्मा अपनी सृष्टि पर आ गयी...

∬ 7 ∬ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- दुख के बंधनों से छूटने के लिए ईश्वरीय सम्बन्ध में रहना है*"

➳ _ ➳ अपनी आंखें बंद कर ,एकांत में बैठ मुरली में लिखे गीत "आज के इस इंसान को ये क्या हो गया" को सुनते सुनते मैं विचार करती हूं कि *पहले जब सम्बन्धों में स्नेह और मर्यादा थी तो सब कितने खुश, आनन्दित दिखाई देते थे* किंतु आज हर मनुष्य के चेहरे पर केवल निराशा और दुख की झलक ही दिखाई देती है।

➳ _ ➳ यह विचार करते करते एक सीन मेरी आँखों के सामने दिखाई देता है। मैं देख रही हूं जैसे सारी दुनिया एक बहुत बड़ी जेल है। सबके हाथ, पैर जंजीरों से जकड़े हुए है। सब इन जंजीरो से छूटने के लिए छटपटा रहें हैं। कैदी बन अपने ही जीवन को एक बोझ की तरह ढो रहें हैं। ना जाने कितने समय से ऐसा ही जीवन जीते आ रहें हैं। *तभी अचानक बहुत तेज दिव्य प्रकाश के साथ एक ज्योति पुंज प्रकट होता है और उसकी अनंत किरणे चारों तरफ फैल जाती है*। उन किरणों की शक्ति से एक एक करके सबके हाथों, पैरों में बंधी बेड़ियां टूटने लगती हैं। जेल की सलाखें एक एक करके गिरने लगती हैं। सभी आजाद हो कर खुशी से नाचने लगते हैं, गाने लगते हैं।

➳ _ ➳ इस दृश्य को देखते देखते जैसे ही अपनी चेतनता में लौटती हूं। उस देखे हुए दृश्य के बारे में विचार करती हूं कि आज वास्तव में सबका जीवन एक जेल की तरह ही तो बन गया है। इस *माया की नगरी, दुख धाम में देह और देह से जुड़े जो भी सम्बन्ध है वो सब जंजीरे ही तो हैं जिसमे सब जकड़े हुए हैं और सब दुखी हैं*। क्योंकि वो सभी सम्बन्ध माया रावण की आसुरी मत पर

चल कर किये हुए विकर्मों के हिसाब किताब को चकुतू करने के लिए बने हैं। इसलिए ये सम्बन्ध नही बन्धन है और बन्धन में सदैव दुख की ही अनुभूति होती है।

➳ _ ➳ इन दुख के बंधनों को सुख के सम्बंध में अगर कोई बदल सकता है तो वो केवल ज्योतिपुंज, परमपिता परमात्मा ही तो है। और वही निराकार, महाज्योति परमपिता परमात्मा सबको दुख के बंधनों से छुड़ा कर सुख के सम्बंध में ले जाने के लिए इस धरा पर आए हुए हैं। *कितनी पदमापदमा सौभाग्यशाली हूँ मैं आत्मा जो दुख के बंधनों से निकल, ईश्वरीय सम्बन्ध में रहने का सौभाग्य मुझे मिला है*। मेरे मीठे शिव बाबा, मेरे परम पिता परमात्मा स्वयं हर सम्बन्ध का सुख मुझे प्रदान कर इन झूठे देह के बंधनों से मुझे मुक्त करा रहे हैं।

➳ _ ➳ यह विचार आते ही मन मे अपने मीठे बाबा से मिलने की इच्छा जागृत हो उठती है और मैं निराकार ज्योति बिंदु आत्मा अपनी साकारी देह को छोड़ अपने निराकार शिव पिता से मिलने पहुंच जाती हूँ अपने निराकारी स्वीट साइलेन्स होम में। *अब मैं अपने शिव पिता के सम्मुख बैठ उनकी अनन्त शक्तियों से स्वयं को भरपूर कर रही हूं*। उनका असीम प्यार और दुलार उनकी शक्तिशाली किरणों के रूप मे निरन्तर मुझ पर बरस रहा है जो मुझे गहन तृप्ति का अनुभव करवा रहा हैं। अब किसी भी देहधारी के झूठे प्यार की मुझे कोई आवश्यकता नही। *सर्व सम्बन्धों का सच्चा रूहानी प्यार मेरे मीठे शिव बाबा से मुझे निरन्तर प्राप्त हो रहा है*।

➳ _ ➳ ईश्वरीय सम्बन्धों का सच्चा सुख प्राप्त कर अब मैं आत्मा साकारी दुनिया मे वापिस लौट रही हूं। अपनी साकारी देह में प्रवेश कर, देह में रहते भी, ईश्वरीय सम्बन्ध का अनुभव अब मुझे देह और देह से जुड़े बन्धनों से मुक्त कर रहा है। *ईश्वरीय याद में रह योगबल से पुराने कर्मबन्धनों के हिसाब किताब चुकतू हो रहें हैं*। मुक्ति में रहते जीवन मुक्ति का अनुभव करते हुए अब मैं आनन्दमयी बन्धन मुक्त जीवन जी रही हूं।

∫∫ 8 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं तपस्या द्वारा सर्व कमजोरियों को भस्म करने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं फर्स्ट नम्बर की राज्य अधिकारी आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

∫∫ 9 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा सदैव बाप के वा स्वयं के गुणों की गिनती करती हूँ ।*
✺ *मैं सदा सम्पन्न आत्मा हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा समय को गिनती करने से सदा मुक्त हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

∫∫ 10 ∫∫ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➾ _ ➾ चांस लेने चाहो तो ले लो फिर यह उल्हना भी कोई नहीं सुनेगा कि मैं कर सकता था लेकिन यह कारण हुआ। पहले आता तो आगे चला जाता था। यह परिस्थितियाँ नहीं होती तो आगे चला जाता। यह उल्हने स्वयं के कमज़ोरी की बातें हैं। *स्व-स्थिति के आगे परिस्थिति कुछ कर नहीं सकती। विघ्न विनाशक आत्माओं के आगे विघ्न पुरूषार्थ में रूकावट डाल नहीं सकता। समय के हिसाब से रफ्तार का हिसाब नहीं। दो साल वाला आगे जा सकता, दो मास वाला नहीं जा सकता, यह हिसाब नहीं। यहाँ तो सेकण्ड का सौदा है। दो मास तो कितना बड़ा है। लेकिन जब से आये तब से तीव्रगति है? तो सदा तीव्रगति वाले कई अलबेली आत्माओं से आगे जा सकते हैं।*

➾ _ ➾ इसलिए वर्तमान समय को और मास्टर सर्वशक्तिवान आत्माओं को यह वरदान है - जो अपने लिए चाहो जितना आगे बढ़ना चाहो, जितना अधिकारी बनने चाहो उतना सहज बन सकते हो क्योंकि - वरदानी समय है। वरदानी बाप की वरदानी आत्माएं हो, समझा - वरदानी बनना है तो अभी बनो, फिर वरदान का समय भी समाप्त हो जायेगा। फिर मेहनत से भी कुछ पा नहीं सकेंगे। इसलिए *जो पाना है वह अभी पा लो। जो करना है अभी कर लो। सोचो नहीं लेकिन जो करना है वह दृढ़ संकल्प से कर लो। और सफलता पा लो।*

✺ *"ड्रिल :- विघ्नों को अपने पुरुषार्थ में बाधा न बना तीव्र गति से पुरुषार्थ करते रहना।"*

➾ _ ➾ एकांत अवस्था में एकांत स्थान पर मैं शान्त स्वरूप अवस्था में बाप दादा की तस्वीर के सामने एक शांति भरे कमरे में बैठी हुई हूं... और बाप दादा को लगातार निहार रही हूं... जैसे-जैसे मैं बाप-दादा को निहारने लगती हूँ... वैसे वैसे मैं अपने अंदर नई शक्तियों का अनुभव करने लगती हूं... मैं बाबा की दृष्टि पाकर बापदादा की आंखों में प्रकाश बनकर डूब जाती हूं... और *अपने आप को अलौकिक मां के ममता भरी गोद में अनुभव करती हूं... अपनी अलौकिक मां की गोद में मैं छोटी सी बालिका बनकर मां से खेल, खेल रही हूं...* और मां से कहती हूं... कि माँ कुछ समय मेरे साथ खेलिये... और मेरी मां मेरे साथ प्यार से बालक के भाव से खेलने लगती है...

⋙ _ ⋙ कुछ समय बाद मेरी अलौकिक मां मुझे अपने मित्र के साथ खेलने के लिए कहती है... और मुझे अपनी गोद से उतार देती है... मैं अपनी अलौकिक मां के आदेश का पूर्णतया पालन करते हुए अपने परमात्मा रूपी मित्र के साथ खेलने के लिए खुले वातावरण में प्रकृति की गोद में खेलने के लिए चली जाती हूं... मेरा वह मित्र भी बालक बनकर मेरे साथ खेलने लगता है... और मेरा हाथ थामे एक ऐसे स्थान पर ले जाता है... जहां पर गहरी नदी तेज बहती हुई कल कल आवाज करती हुई नजर आती है... *मेरा मित्र धीरे धीरे मुझे उस नदी के अंदर ले जाने का प्रयास करता है मैं कुछ डरी सहमी सी उस नदी के अंदर चली जाती हूं... और मैं उस तेज बहाव के कारण अपने आप को उस नदी में स्थित नहीं कर पाती हूं... और ना ही खेलने की इस अवस्था को अनुभव कर पाती हूं...* मैं अपने आप को असक्षम अनुभव करती हूं...

⋙ _ ⋙ और मैं अपने मित्र के साथ उस नदी में अपने मित्र का हाथ थामे खड़ी होने का प्रयास करती हूं... परंतु जैसे ही नदी में पानी का बहाव तेज होता है... मैं उस पानी में स्थित नहीं हो पाती और उस पानी के साथ बहने लगती हूं... और बहते-बहते मैं देखती हूं... कि *मेरा वह छोटा सा मित्र बिल्कुल आराम से उस तेज पानी के तेज बहाव में खड़ा है... मैं उसकी यह अवस्था देख आश्चर्यचकित हो जाती हूं... और उसके मनोबल की सराहना करती हूं... और मैं देखती हूं... कि जैसे ही मैं पानी में गिरती हूं... मेरा वह मित्र मुझे पानी से उठाकर अपने साथ फिर से खड़ा कर लेता है...* और खेलने के लिए कहता है... मैं अपने मित्र की इस प्रक्रिया में पूर्ण तरह से सहायक नहीं हो पाती हूं... क्योंकि मेरी अवस्था मेरे मित्र से बहुत ही कमजोर हो रही है... मेरा मित्र मेरा यह रूप देखकर मेरी भावनाओं को समझते हुए... मुझे उस पानी के बहाव से बाहर निकालकर ले आता है...

⋙ _ ⋙ और मेरे मित्र द्वारा पानी से बाहर आने के बाद... मैं अपने मित्र से अपने डर का इजहार करती हूं... और अपनी कमी कमजोरियों का वर्णन करती हूं... मेरा मित्र मुझे हाथ पकड़कर एक चट्टान पर बिठा देता है... और स्वयं भी मेरे सामने एक चट्टान पर बैठ जाता है... और मुझे कहता है कि... अगर तुम ऐसे ही इन पानी के बहाव रूपी विघ्नों से घबराती रही तो कभी भी

अपने पुरुषार्थ में आगे नहीं बढ़ पाओगे... और ना ही अपनी स्थिति मजबूत कर पाओगी... तथा ना ही तुम हर परिस्थिति का आनंद ले पाओगी... *हमेशा विघ्नों रूपी इन कठिनाइयों में अपने आप को बांध लोगी... अगर तुम्हें इन विघ्नों को पार करना है... तो अपने अंदर नई शक्तियों को भरना होगा... अपने मनोबल को बढ़ाना होगा... जब तक तुम्हारा मनोबल नहीं बढ़ेगा तुम्हारी शक्तियां कभी भी तुम्हारा साथ नहीं देगी... इसलिए हमेशा यह संकल्प करो कि यह जो भी विघ्न आते है... वह तुम्हारी स्थिति को और भी मजबूत बनाने के लिए आए हैं...*

➽ _ ➽ मेरे मित्र की इन बातों को सुनकर मेरे अंदर मनोबल का नया विकास होता है... और मैं अपने आप को शक्तिशाली स्थिति में अनुभव करने लगती हूं... *मैं अपने आप को मास्टर सर्वशक्तिमान की स्टेज पर लाते हुए... अपने मित्र का हाथ पकड़कर उस नदी में पानी के तेज बहाव के बीचो बीच ले आती हूं... और मजबूत चट्टान रूपी अवस्था में खड़ी हो जाती हूं... और जैसे ही वह पानी का तेज बहाव आता है... मैं अपने अंदर यह एहसास लाती हूं कि यह पानी का बहाव मुझे और भी मजबूत करते हुए जाएगा... और मैं देखती हूं... कि यह पानी मेरे पास होकर गुजर जाता है... और मुझे इसके बहाव का जरा भी एहसास नहीं होता...* कि इसका वेग कितना होगा कितना है... इस तरह मैं अपनी अवस्था को धीरे-धीरे मजबूत बना लेती हूं... और उस परमात्मा रुपी मित्र का कोटि-कोटि धन्यवाद करती हूँ... और वहां पर अपनी अलौकिक मां की गोद में प्यारे से बच्चे के रूप में आकर बैठ जाती हूं... और अपने पुरुषार्थ की ओर बढ़ती जाती हूं...

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔